SSN : 2319-8095
rogressive Research Journal
Vol. I No. I December 2012

'समावेशी विकास की गांधीवादी युक्ति

सुधांशु धर द्विवेदी*
उर्वशी सिंह **
शरदेंदु मिश्र***

विकास दर्शाने वाले चमकदार आंकड़ों के बावजूद भारतवर्ष में दो देश बन गए हैं, एक तरफ कथित विकास के लाभों को हड़पने वाला इंडिया और दूसरा वंचित और ठगा हुआ भारत! यह दुर्गति सभ्यता व विकास के पश्चिमी मॉडल को अपनाने के कारण हुई है। एक शताब्दी पूर्व मोहनदास करमचंद गांधी ने हिंद स्वराज लिखते समय भारत की नियति को पहचान लिया था इसलिए उन्होंने विकास व प्रगति का वैकल्पिक प्रारूप प्रस्तुत किया था। उन्होंनें पश्चिमी सभ्यता के खोखलेपन को अपनी अंर्तदृष्टि और काउंट टालस्टाय, जॉन रस्किन, हेनरी डेविड थोरो व दादा भाई नौरोजी जैसे लोगों के लेखन से परखा था। वे वास्तविक विकास को नैतिक उपादानों से जोड़ते हैं तथा अपने सर्वोदय के विचार में समावेशी विकास के प्रारूप को शामिल करते हैं। राज्य को लेकर उनके विचार, ग्राम स्वराज्य की अवधारणा तथा आर्थिक विकेंद्रीकरण व ट्रस्टीशिप के उनके विचार वस्तुतः आखिरी आदमी तक विकास के लाभ को पहुँचाने की तीव्र सदिच्छा के ही उपकरण हैं। राम राज्य की इनकी अवधारणा इस विचार का चरम बिंदु है। यह समावेशी विकास परखे व आत्मनियंत्रण द्वारा पाया जा सकता है उसे उन्होंने स्वदेशी व स्वराज के मुहावरों से बताया। आज जब पृथ्वी विनाशक हथियारों से आक्रांत है, युद्ध, हिंसा व आतंकवाद से त्रस्त है, ग्लोबल वार्मिंग जैसी समस्याएं पृथ्वी पर जीवन के अस्तित्व पर ही प्रश्न चिह्न लगा रही हैं, हमारे स्थल व जलीय संसाधन खतरे में हैं तो विकास के लिए, शांति के लिए, जीवन के लिए विश्व पुनः गांधी व गांधीवादी युक्तियों की तरफ देख रहा है और उनका संदेश गूंज रहा है "यह पृथ्वी हमारी आवश्यकताएं पूरा कर सकती है हमारे लोभ नहीं।"

प्रस्तावना—समावेशी विकास की गांधीवादी युक्ति का पहला संकेत हिन्द स्वराज (1907) में मिलता है, जहाँ गांधी जी पश्चिमी सभ्यता के कटुआलोचक बनकर सामने आते हैं, क्योंकि भोगवादी पश्चिमी सभ्यता सामान्यजन के शोषण पर आधारित है। सामान्यजन अथवा उनके शब्दों में दरिद्र नारायण के लिए उनके अनुसार 'सर्वोदय' का विकास दर्शन उपयुक्त है। यह सर्वोदय आत्म नियंत्रण से परिचालित 'स्वराज' तथा जड़ों से जुड़ाव से सम्बन्धित 'स्वदेशी' द्वारा संभव होता दिखता है। सर्वोदय की उनकी चेतना दलित सुधारों व स्त्री उन्नयन को अपने एजेंडे में तो शामिल करती ही है, साथ में किसानों, कामगारों, शिल्पकारों, आदिवासियों के वास्तविक उन्नयन के लिए प्रयासरत दिखती है। अल्पसंख्यकों के लिए उनके मन में खास कोना है तथा आखिरी आदमी तक विकास का लाभ पहुंचाने के लिए वर्ग समन्वय व हृदय परिवर्तन पर आधारित (और आलोचित भी) ट्रस्टीशिप का रास्ता। गांधी औद्योगीकरण के प्रति–उत्पादों को देख चुके थे तथा भारत जैसे विषाल व जनसंख्या बहुल देश के लिए उसके खतरों को समझ रहे थे। वे उन्नति के विरोधी नहीं थे, उनका विरोध तो शोषण से था। शोषण को कम से कम होने देने के लिए ही वे आर्थिक विकेंद्रीकरण, बुनियादी शिक्षाकार्यक्रम, प्राकृतिक चिकित्सा, पंचायती राज जैसी अवधारणाओं को प्रस्तुत कर रहे थे। इन वैकल्पिक प्रारूपों द्वारा लिंग व अवसर की समानता जैसी चीजें स्वयमेव सिद्ध हो सकती हैं। कुल मिलाकर प्रत्येक मानव या प्राणिमात्र को यदि

* प्रवक्ता (प्राचीन इतिहास विभाग) संत ग्राम्यांचल महाविद्यालय सुरही (बलिया)
** शोध छात्रा, वाणिज्य विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय (इलाहाबाद)
*** प्राचीन इतिहास, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

Scanned with OKEN Scanner

इस पृथ्वी या तंत्र का सबसे न्यायोचित लाभ मिल जाए. ये लाभ अगली पीढ़ी को भी उसी नैतिक रूप में हस्तांतरित हो जाएं और पृथ्वी व समाज अपने सर्वश्रेष्ठ रूप में चलते रहें, यही समावेशी विकास की गांधीवादी युक्ति हो सकती है।

आज हमारा देश अपने को आर्थिक महाशक्ति कहला सकने की दहलीज पर खड़ा है। यूरोप और अमेरिकी अर्थ व्यवस्थाएं जिस समय मंदी की मार से बुरी तरह से त्रस्त थीं हमारा देश विकास के चमकदार आंकड़े बनाए रखने में सफल रहा पर क्या विकास के आंकड़े भारतीय जनगण की असल तस्वीर बयान करते हैं? जिस समय पूरा देश फोर्ब्स की सूची में बढ़ते भारतीयों की संख्या गिन–गिन फूला नहीं समा रहा था ठीक उसी समय विदर्भ, तेलंगाना, बुंदेलखंड के किसान आत्म हत्याएं कर रहे थे हजारों की संख्या में हमारे 'अन्नदाताओं' ने आत्महत्याएं कर लीं पर देश का कोई अखबार, सरकार का कोई माँई का लाल उनकी संख्या गिनने नहीं पहुंचा। हमारे सरकारी गोदामों में लाखों टन अनाज जिस समय खुले में पड़े सड़ रहे थे ठीक उसी समय कालाहांडी व बेल्लारी में लोग भूख से मर रहे थे। पर भूख से हुई मौतों की चिंता तो दूर उन पर लीपापोती पर ही सारा ध्यान केंद्रित था। कहने को तो खरबों रूपयों की सरकारी योजनाएं गरीबों, ग्रामीणों, महिलाओं, दलितों, अल्प संख्यकों, आदिवासियों के लिए चलाई जा रही हैं पर हमारे देश का प्रधानमंत्री ही स्वीकार कर रहा है कि जो पैसा सरकार के यहां से चलता है उसका 95% बीच में ही सोख लिया जाता है और वास्तविक लाभार्थियों को 5% ही मिलता है। आज दुनिया के सबसे ज्यादा गरीब व निरक्षर लोग भारत में बसते हैं। नागरिक जज्बे व साफ–सफाई के प्रति रूखा रवैया हो या भ्रष्टाचरण के प्रति आकर्षण का प्रदर्शन उसमें भारत अव्वल दिखते हैं पर मानव विकास सूचकांकों में हम सबसे फिसड्डी देशों में रहते हैं। हमारी शिक्षा व्यवस्था दुनिया की सबसे असमानता पोषक प्रणाली है तो हमारी स्वास्थ्य–व्यवस्था में गरीबों व आम आदमियों का क्या हश्र है वह देखने के लिए बस निकटतम सरकारी अस्पताल तक जाना होगा। हमें अपनी रेल पर बहुत गर्व है पर वहाँ भारत के आम आदमी की दुर्गति देखनी हो तो जनरल डिब्बे में घुसकर देख लीजिए। कहने को हम दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र हैं, पर उस पर कब्जा किसका है? है किसी आम आदमी में हिम्मत जो 2 करोड़ खर्च करके विधानसभा व 10 करोड़ खर्च करके लोकसभा लड़ सके? लड़े भी तो उस लोकतंत्र को चलाने वाले माफिया, ठेकेदार, दलाल, कितना बढ़ने दें यह ईश्वर ही बता सकता है। आज के हिन्दुस्तान में स्पष्ट रूप से दो तरह के देश पैदा हो चुके हैं पहला इंडिया और दूसरा भारत इंडिया का नागरिक रहता तो इंडिया में ही है पर वह सपने विदेश के ही देखता है, उसके बच्चे महंगे पब्लिक स्कूलों में पढ़ते हैं, उसका इलाज फाइव स्टार अस्पतालों में होता है, वह पैसे के बल पर सुविधाएं, नौकरी व पद खरीद सकता है। उसे नैतिकता से कोई मतलब नहीं है, उसे सिर्फ उपभोग से मतलब है, उसे इंडिया से मतलब नहीं है वह तो उसके लिए सराय है, शिट इंडिया है पर देश की सारी नीतियाँ, कानूनी सुविधाएं, नौकरी ताम–झाम सब उसी के लिए है। क्योंकि आंकड़ों का निर्माण वही करता है। आंकड़ों का लाभ भी वही उठाता है भारत तो हमेशा आंकड़ों से दूर पड़ा रहता है या मानव विकास सूचकांकों के सबसे नीचे पड़ा कराहता रहता है। आज से साल पहले गांधी नामक शख्स ने भारत की नियति को सबसे नजदीकी ढंग से परखा था और प्रगति विरोधी होने का लेवल चिपक जाने का खतरा उठाकर भी समावेशी विकास ही नहीं, समावेशी समाज का सपना देखा था, 'हिंद स्वराज' की छोटी सी पुस्तिका के माध्यम से। वह निर्भय व्यक्ति था जिसे भारत का भविष्य साफ दिखाई दे रहा था। उन्होंने पश्चिम में रहकर आधुनिक सभ्यता को करीब से देखा था उसकी भयावह सच्चाई को खुली आँखों से देखा था। यह उनकी सूक्ष्म अंर्तदृष्टि ने बहुत पहले द0 अफ्रीकी समाज को देखकर ही महसूस कर लिया था। तभी तो 25 वर्षीय तरूण गांधी ने 3 दिसम्बर 1894 को 'नेटाल मर्करी' में लिखा था– "चमकीली सतह, भौतिक आकर्षण, पागल उत्तेजना भरी भागदौड़ के बावजूद आधुनिक सभ्यता मनुष्य की आत्मा की जरूरतों व बेहतर जीवन की कामना की पूर्ति में सहायक सिद्ध होने के बजाय, बाधक ही थी।" उस समय भी उन्हें इस बात में जरा भी शक नहीं था कि विज्ञान

Scanned with OKEN Scanner

त्कार, प्रगति के दावे और विकास के कथित आंकड़ों के पास जीवन की विकट समस्याओं से जूझती मनुष्यता को ने के लिए ठोस व सारवान कुछ भी नहीं था। पश्चिमी विकास व सभ्यता की भर्त्सना में गांधी अकेले न थे। स्वयं श्चिम में बुद्धिजीवियों का एक संवेदनशील वर्ग उसकी तीखी और गहरी आलोचना कर रहा था। अल्लामा इकबाल ने उस सभ्यता के अधूरेपन और खोखलेपन को अनेक काव्यपंक्तियों में अत्यंत धारदार शब्दों में रेखांकित किया है। ौद्योगिक प्रगति और बढ़ते औद्योगीकरण की चमक दमक के बावजूद अधिसंख्य लोगों के जीवन में गहरा अंधकार ही ।। मनीषी इकबाल ने मन की आंखों से देख कर लिखा था।–

जिसने सूरज की शुआओं को गिरफ्तार किया
जिन्दगी की शबे तारीक सेहर कर न सके।

जिन्होंने सूरज की किरणों को बंदी बना लिया है, वे जीवन की अंधेरी रात को सवेरा नहीं दे सके।)

गांधी की तरह इकबाल भी पश्चिमी सभ्यता को भयावह रूप से आत्मघाती मानते हैं। सन् 1907 में कही गयी पनी एक चर्चित गजल में वह पश्चिम को दो टूक ढंग से सावधान करते हैं–

तुम्हारी तहजीब अपने खंजर से आप ही खुदकुशी करेगी
जो शाखे नाजुक पे आशियाना बनेगा नापायेदार होगा।

वस्तुतः गांधी जब मानवीय प्रगति के पश्चिमी मानदण्डों की आलोचना कर रहे होते हैं तो उनके मन में ूंजीवादी व्यवस्था, पश्चिमी भोगवाद व काफी हद तक चर्चा के साथ उसकी दुरभिसंधि का मुद्दा भी समाया होता है। ाप जान पॉल द्वितीय ने अपनी पुस्तक 'क्रासिंग ऑफ दि थ्रेश होल्ड ऑफ होप' में गांधी के मोहभंग की इस प्रक्रिया ो सर्वथा उचित ठहराया है। भारतीयता की मर्म से उतना बेहतर परिचित न होने के कारण ही हिंदस्वराज को उसके रोधी निंदित करते हैं। किशन पटनायक अपनी पुस्तक 'विकल्पहीन नहीं है दुनिया' में आधुनिक सभ्यता व ौद्योगीकरण के बारे में गांधी के विचारों के मूल तत्व का परीक्षण करते हुए इस नतीजे पर पहुंचते हैं कि सभ्यता व विकास के विमर्श में लगभग अकेले पड चुके गांधी वाकई कितना प्रासंगिक थे। वे एक शताब्दी पहले ही पूंछने लगे थे के विकास के इस मॉडल में मनुष्य कहाँ है? मनुष्यता कहाँ है ? आज भी तथाकथित विकास (अथवा विनाश) के प्रतिरोधी वरों के रूप में गांधी वादी युक्तियों से लड़ते लोग ही दिखाई पड़ते हैं, वे चाहे विस्थापितों की लडाई लड रही मेधा ाटेकर हों या बांधों के विनाशक रूप के खिलाफ खड़े स्व0 बाबा आप्टे व सुंदरलाल बहुगुणा। वंदना शिवा, प्रो0 राजेंद्र सिंह, अन्ना हजारे आदि समावेशी विकास के गांधीवादी माडल के ही तो पहरुए हैं।

समावेशी विकास का गांधी वादी मॉडल 'सर्वोदय' की बात करता है। इसमें स्त्रियां भी शामिल हैं, दलित, ादिवासी, अल्पसंख्यक और वे सभी पक्ष जिन्हें डार्विन के जैव वाद ने कमजोर समझकर किनारे फेंक दिया है। तभी ो वे जंतर देते हैं, वह जंतर जो विकास या मानवीय जीवन शैली का सबसे संवेदनशील सूत्र हो सकता है। वे कहते ं कि 'जब भी तुम कोई कार्य करो तो सोचो कि समाज के सबसे दीनहीन व्यक्ति के जीवन में क्या अंतर पैदा कर रहा है।' गांधी जी का यह जंतर उनके जीवन की कसौटी थी और जीवन की जीने की गांधीवादी युक्ति। तभी तो उनकी रणा से उनके अनुयायियों में से एक विनोबा भूमिहीनों के लिए भूदान के लिए पूरा जीवन समर्पित कर देते हैं और बाबा साहब आम्टे कुष्ठ रोगियों के लिए आजीवन आशा की किरण बनकर रहते हैं। नेलसन मंडेला जैसा क्रांतिकारी गांधी में ही काले लोगों के उत्कर्ष का बीज मंत्र पाता है तो अमेरिका के मार्टिन लूथर किंग को नीग्रो लोगों के लिए आशा की सबसे बड़ी किरण गांधी वादी तरीके में दिखाई देती है। विकास व जीवन पद्धति का उनका मॉडल केवल भारतीयता से ही प्रेरित था ऐसा नहीं है क्योंकि यह मॉडल तो विश्वजनीन है और पूरे विश्व को भोगवादी पश्चिमी सभ्यता का एक वैकल्पिक मानवीय प्रारूप उपलब्ध करता है। गांधी को यह दृष्टि विश्वजनीन सोच रखने वाले मनीषियों से भी मिली तथा कुछ उन्होंने अपने सत्य के प्रयोगों द्वारा अपने अनुभव से प्राप्त की। गांधी को प्रभावित करने वाले मनीषियों में

Scanned with OKEN Scanner

महात्मा तालस्ताय, जॉन रस्किन व हेनरी डेविड थोरो के नाम प्रमुख हैं पर 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भार पश्चिम में भी ऐसे अनेक मनीषी थे जो अपने, उनके विचार जगत को प्रभावित कर रहे थे। इनमें दादा भाई जस्टिस रानाडे व उनके राजनैतिक गुरू मानेजाने वाले गोपाल कृष्ण गोखले प्रमुख थे। दादा भाई की पुस्त एण्ड अन ब्रिटिश रूल इन इंडिया' के विचारों को गांधी ने बार–बार उल्लेख किया है, जो इस पुस्तिका के सन को दर्शाता है। थियोसॉफिकल सोसायटी की सह संस्थापिका मैडम एच0एच0पी0 ब्लावत्सकी (1831–18 मृत्यु के पूर्व सिविलाइलेशन : दि डेथ ऑफ आर्ट एंड ब्यूटी शीर्षक से एक विचारोत्तेजक लेख लिखा जिस एशियाई समाज को योरोपीय सभ्यता के चमकते छलावे से अभिभूत हो उसकी नकल की प्रवृति के विरुद्ध सख्त दी थी। उन्होंने प्रभावी शब्दों में कहा कि "घिनौने कोढ़ की तरह हमारी योरोपीय सभ्यता पूरे संसार को खा खाती चली जा रही है। उसने मनुष्य के हृदय को पत्थर बना दिया है, जो शब्दों से परे स्वार्थी, लोलुप और हो चुकी है।" मैथ्यू अर्नाल्ड के सहारे कहें तो रूग्णत्वरा और खंडित उद्देश्यों ('सिक हरी एंड डिवाइड अभिशप्त आधुनिक सभ्यता ने गांधी के अनुसार मनुष्य को बधिया बना दिया है। निश्चेष्टता व अकर्मण्यता के या का बिम्ब गांधी के यहाँ कई बार आया है। संभवतः निहित स्वार्थी व दिग्भ्रांत वर्ग जब अपने क्षुद्र निजी हि किसी सभ्यता की अंतरात्मा को हाईजैक करने पर आमादा होता है तो उसी सभ्यता के एक कोने से उसके विवेक की एक अदम्य आवाज उभरती है। अक्सर यह एक अल्पसंख्यक आवाज होती है जो प्रारंभिक उदासीनता के बावजूद सुनी जाने लगती है। कुछ ऐसा ही उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में औपनिवेशिकता प्रेरित औद्योगीकरण के घटटोप में पश्चिम में हुआ। भोगकेंद्रित भौतिकतावादी आधुनिक सभ्यता के प्रतिरोध में रूस लियो तालस्ताय (1828–1905) इंग्लैंड से रूसी मूल की ही मैडम हेलेना पेत्रोवना ब्लॉवत्स्की, जॉन रस्किन (181 एवं थामस कार्लाइल (1795–1881) और अमेरिका से आर0डब्ल्यू एमर्सन (1803–1882) तथा हेनरी थ (1817–1862) जैसे विचारकों, रचनाकारों की आवाजें जड़ता के गुरुत्वाकर्षण को बेध कर उठने लगीं और संवेदनशील दिलों पर धीरे–धीरे ही सही उसकी दस्तक सुनायी पड़ने लगी। ये आवाजें पश्चिम में उगते पश्चिम' की थीं जो पहली बार अस्तंगत होती उन्नीसवीं सदी में पढ़ने पहुंचे तरूण गांधी के कानों में जरूर प वस्तुतः उनके नैतिक प्रतिमानों को गढ़ने का काम यदि काउंट तालस्ताय व थोरो ने किया तो मानवीय विकास प्रश्नों को समझने में जॉन रस्किन का महत्वपूर्ण योगदान रहा। जॉन रस्किन की 'ए ज्वॉय फार एवर' 1857 में में आयोजित कला प्रदर्शनी के दौरान दिए गए दो भाषणों का संकलन है। यह पुस्तक औद्योगिक सभ्यता की द्वारा की गई समीक्षा का प्रस्थान बिंदु है। उनके अनुसार राष्ट्रीय श्रम का समुचित प्रबंध कौशल सही रा अर्थव्यवस्था का सबसे महत्वपूर्ण अंग है। उसका उद्देश्य उपयोगिता व भव्यता दोनों होना चाहिए। इसे सामान्य जन, मजदूरों और किसानों की मूलभूत आवश्यकताओं और सुविधाओं की ओर ध्यान देना चाहिए। संतुष्टि के बाद ही भव्यता पर विचार करना चाहिए। दुर्भाग्यवश इसके ठीक उल्टा हो रहा था। समूची रा अर्थव्यवस्था का ध्यान मुट्ठी भर श्रीमंत वर्ग को सुख, सुविधा और विलासिता के अधिक से अधिक संसाधन कराने पर केन्द्रित था और बहुसंख्यक श्रमजीवी वर्ग अपनी न्यूनतम जरूरतों की संतुष्टि और रंचमात्र सुविधा नों से भी वंचित था। जब तक लोगों के तन पर कपड़े और ओढ़ने के लिए कम्बल जैसी जरूरतें पूरी नहीं तब तक समृद्ध समाज के लिए भव्य परिधान और विलास के उपकरण का ख्याल भी अपराध था। महात्मा रस्किन के उन विचारों को आत्मसात किया और उसे अपनी जीवन पद्धति में उतारा भी।' गांधी जी ने 1896 जाते हुए रास्ते में अपने मित्र पोलॉक द्वारा दी गयी जॉन रस्किन की पुस्तक 'अन टू दिस लास्ट' को पढ़ा और इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने 'सर्वोदय' के नाम से उसका गुजराती में अनुवाद किया। इस पुस्तक से उन्होंने सीखीं जो उनकी प्रगति व विकास के सम्बन्ध में समझ का आधार बनीं–(1) एक व्यक्ति का हित सभी व्यक्तियों में निहित है (2) एक वकील के कार्य का भी उतना ही महत्त्व है जितना कि नाई के कार्य का, क्योंकि सभी को अपने कार्य से आजीविका प्राप्त करने का समान अधिकार है (3) शारीरिक श्रम करने वाले किसान या का जीवन ही वास्तविक जीवन है। गांधी ने रस्किन से प्रभावित होकर बुद्धि की अपेक्षा चरित्र पर अधिक बल दिया

Scanned with OKEN Scanner

बल को सर्वोच्च स्थान दिया, जीवन में राजनैतिक तथा आर्थिक क्षेत्रों में धर्म को महत्ता दी और पूँजीपतियों से यह अपेक्षा तथा आशा रखी कि वे मजदूरों के संरक्षक बनें और पितृतुल्य व्यवहार करें। उनके द्वारा प्रन्यास (ट्रस्टीशिप) सिद्धांत का प्रतिपादन इसी उद्देश्य से प्रेरित था। कुछ आलोचकों के द्वारा न केवल गांधी जी की इस आर्थिक अवधारणा को अव्यवहारिक बताया है, वरन् उनके उद्देश्य पर भी संदेह किया है। ये आलोचक कहते हैं कि प्रन्यास सिद्धांत का प्रतिपादन पूंजीवाद की रक्षा करने के लिए ही किया गया और गांधीवादी दर्शन पूंजीवादी पद्धति का अभिन्न अंग है, यद्यपि हृदय परिवर्तन की विचारधारा कंटकाकीर्ण होने के कारण थोड़ी अव्यवहारिक है, किन्तु गांधी की नैतिक ईमानदारी पर संदेह करना उनके साथ अन्याय करना है। गांधी जी को अहिंसात्मक साधनों के आधार पर मानव हृदय परिवर्तन की क्षमता में अद्भुत विश्वास था और अपने इसी आध्यात्मिक विश्वास के कारण दरिद्रनारायण के सच्चे साथी के नाते उन्होंने ट्रस्टीशिप का सिद्धांत दिया। उनके पूंजीवाद समर्थक होने का आक्षेप इस कारण से और भी अधिक अनुचित हो जाता है कि उन्होंने प्रन्यास सिद्धांत की असफलता की स्थिति में संपत्ति के राष्ट्रीयकरण एवं श्रमिकों के द्वारा सामूहिक रूप से उद्योगों के प्रबंध का सुझाव दिया था। प्रो० गुन्नार मिर्डल जैसे विचारक अर्थशास्त्रियों के अनुसार उनका ट्रस्टीशिप सिद्धांत जनसामान्य के आर्थिक हितों की रक्षा का साधन बनने के बजाय पूंजीपतियों का 'रक्षा कवच' बनकर ही रह जाता है।[3] पर दुराग्रही आलोचना के घटाटोप के परे देखें तो आज हमारे देश में आम जनता की लड़ाई लड़ रहे अधिकांश लोग सच्चे गांधीवादी हैं तथा आंगसान सू की, दलाई लामा, रिगोबार्टा मांचू, बंगारू मथाई जैसे असंख्य नाम गांधीवादी प्रतिरोध के उदाहरण हैं जो प्रभावी ताकतों के खिलाफ व आम जन के हित के लिए संघर्षरत हैं।

समावेशित विकास के मानदंडों के अनुसार ही वे राज्य की भूमिका को संदेह की दृष्टि से देखते हैं। एक स्थान पर वे इस सम्बन्ध में लिखते हैं, 'मैं राज्य की शक्तियों में वृद्धि को बड़े भय तथा शंका की दृष्टि से देखता हूँ, क्योंकि ऊपर से देखने पर शोषण को कम करते हुए राज्य एक अच्छा कार्य करता हुआ मालूम पड़ता है, किन्तु व्यक्ति के व्यक्तित्व का विनाश कर, वह मनुष्य जाति को सबसे अधिक हानि पहुंचाता है। हम ऐसे अनेक उदाहरण जानते हैं जहाँ मनुष्य ने संरक्षक के रूप में कार्य किया है किन्तु ऐसा कोई उदाहरण नहीं है जहाँ राज्य का अस्तित्व वास्तव में दरिद्रों के कल्याण के लिए रहता है। हालांकि सिद्धांत रूप में राज्य के अस्तित्व के विरुद्ध होने पर भी वे वर्तमान परिस्थितियों में राज्य को समाप्त करने के पक्ष में नहीं थे। राज्य को एक आवश्यक बुराई के रूप में स्वीकार करते हुए गांधीजी ने राज्य के प्रभाव एवं शक्ति को अधिक से अधिक कम करने का प्रयत्न किया, जिससे राज्य सत्ता के होते हुए भी व्यक्ति वास्तविक रूप में स्वतन्त्रता प्राप्त कर सके। इस सम्बन्ध में वे हेनरी डेविड थोरो के इस सिद्धांत से प्रभावित थे कि 'सर्वोत्तम सरकार वह है जो सबसे कम शासन करती है।' उन्होंने विकास के लाभ को जड़ों तक पहुंचाने के लिए ही सत्ता के विकेन्द्रीकरण पर बल दिया तथा ग्रामस्वराज की अपनी नीति का प्रतिपादन किया। राजनैतिक क्षेत्र में विकेन्द्रीकृत सत्ता से उनका अभिप्राय यह था कि ग्राम पंचायतों को अपने गांवों का प्रबंध और प्रशासन करने के सब अधिकार दे दिए जाएं। उनका कहना था कि सत्ता का केन्द्रीकरण सदैव ही हानिकारक होता है। इसके परिणामस्वरूप कुछ थोड़े से व्यक्तिराज्य की सत्ता पर एकाधिकार स्थापित कर लेते हैं और छल कपट द्वारा उनके साधनों का प्रयोग अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए करते हैं। इसे रोकने का एकमात्र उपाय सत्ता का विकेन्द्रीकरण ही हो सकता है। राजनैतिक और आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी गाँवों का चित्र उपस्थित करते हुए उन्होंने लिखा है, "मेरे ग्राम स्वराज्य का आदर्श यह है कि प्रत्येक ग्राम एक पूर्ण गणराज्य हो। अपनी आवश्यक वस्तुओं के लिए वह पड़ोसियों पर निर्भर न रहे। इस प्रकार प्रत्येक गांव का पहला काम होगा खाने के लिए अन्न एवं कपड़ों के लिए रूई की फसल उत्पन्न करना। गांव की अपनी नाट्यशाला, सार्वजनिक भवन और पाठशाला भी होनी चाहिए। प्रारम्भिक शिक्षा अन्तिम कक्षा तक अनिवार्य होगी। यथासंभव प्रत्येक कार्य सहकारिता के आधार पर किया जाएगा। गांव का शासन पाँच व्यक्तियों की पंचायत द्वारा संचालित होगा। पंचायत ही गांव की व्यवस्थापिका, कार्यकारिणी व न्यायपालिका सभी कुछ होगी। ग्राम स्वराज की यही अवधारणा आखिरी आदमी तक विकास की वास्तविक किरण पहुंचा सकती है। हालांकि गांधीवाद ठेठ राजनैतिक व आर्थिक युक्ति नहीं है फिर भी भारत की पंचायतीराज व्यवस्था समावेशी विकास के गांधीवादी तरीके का प्रारम्भिक बिन्दु

Scanned with OKEN Scanner

तो हो ही सकता है यदि वहाँ सत्य व अहिंसा का स्थान भी सुरक्षित हो जाए। अन्ना हजारे ने रालेगांव सिद्धि नामक तालुके में उनके मॉडल को कार्य रूप भी दिया है तथा बाबा साहेब आम्टे के बेटे व बहू प्रकाश व मंदाकिनी आम्टे गढचिरौली के आदिवासी इलाके में गौंड आदिवासियों के बीच यही प्रयोग कर रहें हैं। मध्य प्रदेश से शुरु होकर अन्य प्रदेशों में ग्राम स्वराज का प्रयोग सरकारी स्तर पर भी अपनी तमाम कमियों के बावजूद जारी है ही जिसके द्वारा महिलाओं, दलितों तथा अन्य वंचित वर्गों को विकास की मुख्यधारा में न केवल लाया जा रहा है बल्कि उन्हें नेतृत्व देने के लिए भी तैयार किया जा रहा है।

गांधी का एक सपना था रामराज्य का! यह शायद समावेशी विकास की सर्वश्रेष्ठ युक्ति हो सकती है। 'रामराज्य' शब्द का प्रयोग कुछ भ्रामक हो सकता है गांधी भी इस बात से परिचित थे। उनके द्वारा रामराज्य' शब्द का प्रयोग भावना वंश आलंकारिक अर्थ में किया गया है, शाब्दिक अर्थ में नहीं। इस सम्बन्ध में यह बात भी स्मरणीय है कि गांधी जी ने भी प्लेटों के समान दो आदर्शों का वर्णन किया है : प्रथम पूर्ण आदर्श और द्वितीय, उप–आदर्श। उनकी पूर्ण आदर्श सामाजिक व्यवस्था के अंतर्गत राज्य के लिए कोई स्थान नहीं है। लेकिन गांधी जी यथार्थवादी थे और उन्होंने इस बात को स्वीकार किया है कि मानव स्वभाव की वर्तमान स्थिति को देखते हुए पूर्ण आदर्श की स्थापना संभव नहीं है। इसलिए उनके द्वारा व्यवहारिक दृष्टिकोण से उप–आदर्श की कल्पना की गई है और गांधी जी के आदर्श समाज या राज्य के रूप में हमारे द्वारा उनके उप–आदर्श का ही अध्ययन किया जाता है। उनका यह राज्य अहिंसात्मक व लोकतांत्रिक तो होगा ही वह विकेंद्रीकृत भी होगा। इस राज्य में आर्थिक विकेंद्रीकरण होगा जिसमें विशाल व केंद्रीकृत उद्योगों का कोई स्थान नहीं होगा तथा उने स्थान पर कुटीर उद्योग–धन्धे चलाए जाएंगे। उन मशीनों का तो प्रयोग किया जाएगा जो मानवों के लिए सुविधाजनक होती है पर उन्हें मानवीय श्रम के शोषण का साधन नहीं बनाया जाएगा। प्रत्येक व्यक्ति अपने उत्पादन के साधनों का स्वयं स्वामी होगा तथा प्रत्येक गांव आत्मनिर्भर होगा। इस तरह उत्पादन के क्षेत्र में अनुचित प्रतिस्पर्धा व किसी भी तरह के शोषण का अंत हो जाएगा। भारत में स्वतंत्रता के बाद बड़े पैमाने पर खादी ग्रामोद्योग व कुटीर उद्योग को प्रोत्साहित किया गया है पर सरकार की नीतियों में विरोधाभास है। यह विरोधाभास राज्य के सत्तावादी चरित्र की एक कड़वी हकीकत है। राज्य करने वाले धीरे–धीरे खुद में एक वर्ग बन जाते हैं और सत्ता के विकेंद्रीकरण में बाधा उत्पन्न करते हैं। कहने को तो भारत एक लोकतंत्र है पर विश्व बैंक, पूंजीपतियों, बहुराष्ट्रीय कंपनियों, विश्व व्यापार संगठन द्वारा सुझाए व निर्देशित किए गए हित हमेशा आम आदमी के हित पर भारी पड़ते हैं। यह आधुनिक सभ्यता बाजारवादी सभ्यता है तथा बाजार के तर्क हमेशा आम आदमी के हितों पर गाज की तरह गिरते हैं। गांधी वादी समावेशी विकास की युक्तियाँ इन्हीं बाजारवादी युक्तियों से सीधे मुठभेड़ करती दिखती है। बाजार कहता है कि सच्चाई एक हरे रंग का साबुन है जिसका नाम हमाम है" पर गांधी कहते हैं कि सच्चाई मानवता का वह आधार है जिस पर सभ्यता टिकी हुई है। बाजार के लिए हिंसा एक ऐसा उत्पाद है जो शायद सबसे बिकाऊ विकल्प देती है, पर गांधी के लिए अहिंसा जीवन जीने की सर्वश्रेष्ठ रीति है बाजार कुछ मुट्ठी भर लोगों को लाखों–करोड़ों को नियंत्रण में लेने की ताकत देता है, पर गांधी इसी नियंत्रण, इसी पराधीनता को खत्म करना चाहते हैं, यही तो उनका 'स्वराज' है। भोगवादी जीवन पद्धति को नकार कर आत्म नियंत्रण परक रचनात्मक जीवन पद्धति। यही तो है स्वराज के रास्ते समावेशी विकास को समुचित रूप में प्राप्त करने का गांधी वादी रास्ता !! इसीलिए उन्होंने 'स्वदेशी' पर जोर दिया। अति सरलीकरण करके लोग इसे देशी तथा विदेशी वस्तुओं की सूची से इसका सम्बन्ध स्थापित करते हैं पर स्वदेशी का अर्थ था अपनी जड़ों से जुड़ाव, और यह जुड़ाव भी ऐसा वैसा नहीं बल्कि सामुदायिक या सामूहिक। इसका प्रतीक बना चरखा। देश के लोक जीवन में युगों से व्याप्त चर्खे का पुनरनुसंधान उन्होंने आर्थिक पराधीनता से जूझने के लिए स्वालंबन के एक सबल हथियार के रूप में तो किया ही था पर वह शीघ्र ही निरंकुश साम्राज्यवाद से लड़ने का एक ऐसा चमत्कारिक कला प्रतीक बन गया कि राष्ट्रीय झंडे की अहिंसक श्वेत सात्विक पट्टी पर अंकित हो वह लाखों को आत्म त्याग व आत्म बलिदान की अपूर्व प्रेरणा देने लगा।* और संक्षेप में अंततः यह कहूँ कि इसी चरखे में ही उनके विकास का मॉडल छिपा है उनका सपना छिपा है तो गलत न होगा। यह ऐसा प्रतीक है जो सबका है। इस पर किसी का विशेषाधिकार नहीं हैं, कोई भी चाहे इसके द्वारा रोटी कपड़े व मकान की जद्दोजहद के लिए स्वतंत्र

Scanned with OKEN Scanner

होकर भाग ले सकता है,बगैर अपनी जड़ों को छोड़े, बगैर लोभ के और बगैर किसी को क्षति पहुंचाए या शोषण के बिना समावेशी विकास के लिए इतनी सबल, सक्षम युक्ति क्या हो सकती है? आज औद्योगीकरण तथा हिंसा ने इस विश्व पर भयानक संकट उपस्थिति कर दिया है विनाशक हथियारों की दौड़ इस स्तर पर आ गई है कि जरा सी मानवीय चूक पृथ्वी का समूल नाश कर सकती है। परमाणु हथियारों का इतना संग्रह हो चुका है कि इस पृथ्वी को चालीस बार नष्ट किया जा सकता है। रासायनिक हथियार इस सुंदर पृथ्वी पर जीवन के विनाश का काम पलक झपकते कर सकते है। प्रतिहिंसा की अग्नि में पलते आतंकवादी समूहों ने कहीं भी मानव जीवन को सुरक्षित नहीं छोड़ा है, बढ़ती कार्बन गैसों ने पृथ्वी पर जीवन के अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह लगा दिया है, हमारी अन्नदात्री मिट्टियाँ, सिंचित करने वाली नदियाँ सभी प्रदूषित व नष्टप्राय हो रही हैं। पृथ्वी पर जीवन का आधार रहे वन भयानक पागलपन के वशीभूत होकर काटे जा रहे हैं। पृथ्वी के अधिकांश जीव विलुप्ति के कगार पर है यह सब तब है जब हमने ज्ञान के अनंत साधन विकसित कर लिए हैं। हम सूचना युग या 'साइबर स्पेस' में रह रहे हैं पर हमें यह खबर तक नहीं है कि हमारे नीचे की धरती खिसकी जा रही है। हम मुट्ठी भर लोगों के मजे व शौक के लिए लाखों आदिवासियों मूलनिवासियों को उनकी जड़ों से उखाड़ दे रहे हैं। पूरी की पूरी अमेरिकी व योरोपीय सभ्यता रेड इण्डियन, अफ्रीकियों व एशियाइयों के दर्दनाक आखेट पर खड़ी है और अभी यह आखेट बंद नहीं हुआ हैं बहुराष्ट्रीय कंपनियों का नवसाम्राज्यवादी व नव उपनिवेशवादी अभियान तीव्रतर ढंग से चलाया जा रहा है। वे चाहे नाइजीरिया के केन सारोवीवा हों, गुआनातोमो बे या अबू गरीब जेल के कैदी हों या फिर ईराक, अफगानिस्तान, वियतनाम में अपने अंगों, बंधु–बांधवों को गंवा चुके लोग वे सभी मानवीय प्रतिहिंसा व लोभ के अनथक दंश के विवश शिकार हैं। गांधी की अंर्तदृष्टि ने इसे, इस नियति को बहुत पहले देख लिया था। तभी उन्होंने कहा था कि "यह पृथ्वी हमारी आवश्यकताओं को पूरा कर सकती है, हमारे लोभों को नहीं।" अतः अब वह समय आ गया है कि पृथ्वी को बचाने, मानवता को सुरक्षित बनाने तथा विकास के वास्तविक प्रारूपों को अंतिम आदमी तक पहुंचाने के लिए हम गांधीवादी युक्तियों का अनुसरण करें जैसे दुनिया को राह दिखाने वाले अनेक सामाजिक नेतृत्व कर्ता कर भी रहे हैं।

संदर्भ

1. बी0पी0 सीतारमैया, गांधी एवं गांधीवाद।
2. गुन्नार मिर्डल, एशियन ड्रामा–एन इन्क्वायरी इन दू द पावर्टी आफ दि नेशन।
3. यंग इंडिया, 2 जुलाई 1931, पेज 162।
4. हेनरी डेविड थोरो, सेलेक्टेड राइटिंग्स आन नेचर एण्ड लिबर्टी पेज नं. 10।
5. वीरेन्द्र कुमार बरनवाल, हिंद स्वराज : नव सभ्यता विमर्श।

सहायक ग्रंन्थ

1. माई एक्सपीरियंस विद माई ट्रुथ– एम0के0 गांधी।
2. स्लेवरी ऑफ आवर टाइम्स–लियो तालस्ताय।
3. दि किंगडम ऑफ गॉड इज विदिन यू– लियो तालस्ताय।
4. दि फर्स्ट स्टेप–लियो तालस्ताय।
5. हाउ शैल वी इस्केप–लियो तालस्ताय।
6. भारत की खोज– जवाहर लाल नेहरू।
7. 'हिज लाइफ एण्ड थॉट– जे0बी0 कृपलानी।
8. 'क्रासिंग आफ दि थ्रेशहोल्ड ऑफ होप'– पोप जॉन पाल द्वितीय।
9. विकल्पहीन नहीं है दुनिया– किशन पटनायक, राजकमल पेपरबैक्स।
10. 'ए ज्वॉय फॉर एवर– जॉन रस्किन, 1857।
11. सर्वोदय– महात्मा गांधी।
12. अन टू दिस लॉस्ट–जॉन रस्किन।
13. पहला गिरमिटिया– गिरिराज किशोर, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन।

Scanned with OKEN Scanner